पशुधन मूल्य

जैसलमेर जिले में पशुपालन ही आम लोगों का मुख्य व्यवसाय है। शुष्क क्षैत्र में पारम्परिक पशुपालन में पशुधन की कीमत स्थिर नही रहते हुए अच्छे जमाने (बरसात वाले वर्ष) व अकाल सक प्रत्यक्ष प्रभावित होने के साथ- साथ उनकी नस्ल व उपयोगिता से निश्चित होती है। जो सरकार की कृषि पशुपालन नीतियों एवं पशु चिकित्सा से भी सुसंगत है।

मूल्य सारणी:-

वर्ष	गाय	बैल	भेड़	बकरी	ऊंट
1940	40	45	5	3.5	65
1950	200	200	60	40	350
1960	450	600	60	80	700
1970	1000	1100	100	200	1400
1980	2000	1500	200	600	3000
1990	3500	1200	550	600	8500
2000	4000	800	1000	1000	8000
2005	6000	800	1500	1500	10000

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करे तो देखते है कि वर्ष 1940 में गाय की कीमत 40 रुपये व बैल की कीमत 45 रुपये थी, भेड़ की कीमत 5, बकरी की कीमत 3.5, ऊंट की कीमत 65 थी, यदि इनके मूल्य वृद्धि पर विचार करे तो विगत 60 सालों के बाद बकरी की कीमतो में इतनी भारी वृद्धि हुई है।जबकि दूसरे पशुओं की कीमतों में इतना बदलाव नही आया है। राष्ट्रीय नितीयों में पशुपालन का अवमूल्यन एवं भूमि उपयोग के तरीकों में आये बदलाव का सीधा असर पशुओं की कीमत पर दिखाई पड़ता है। ट्रैक्टर का उपयोग कृषि कार्यो में होने के कारण भी इनकी संख्या ओर कीमतों में भारी गिरावट आई है। बैल की कीमत पर अगर बात करे तो पता चलता है कि इसकी कीमतों में करीब 18 गुणा वृद्धि हुई है। जो कि पशुधन में सबसे कम है। जिसका कारण खेती में बैलों का उपयोग कम हो गया है। गाय की कीमतों में करीब 150 गुणा वृद्धि हुई है। जो कि बहुत अधिक नही है।

इसके प्रमुख कारण:-

- कारण गायों की नस्ल सुरक्षित नही हो पाना
- निरन्तर अकाल से दुग्ध उत्पादन कम होना
- फसलों का उत्पादन कम होना

इस कारण खुली चराई का क्षेत्र कम होने से गौपालन प्रभावित हुआ। इसके साथ-साथ चारे, पशु आहार व दुग्ध उत्पादों पर बाजार का नियन्त्रण होने व अकाल से प्रभावित होने के कारण पशु पालक को दुग्ध का उचित मूल्य नही मिलने से भी गाय की कीमत में भारी गिरावट आई हैं। भेड़ की कीमत वृद्धि 300 गुणा व बकरी की कीमत वृद्धि 428 गुणा हुई है। जो कि सबसे ज्यादा है। बकरी और भेड़ की जीवन क्षमता सबसे अधिक होने के कारण एवं छोटे पशु होने के कारण चारे,पानी का संकट अत्यधिक प्रभावित नही करता है। क्यों कि चारागाह एवं खुली भूमियों की कमी गाय की तुलना में भेड़, बकरी को कम प्रभावित करती है। इसके साथ-साथ मीट व अन्य कार्यो के लिए इनकी उपयोगिता भी इसका एक सफल कारण है। ऊंट की कीमत वृद्धि 165 गुणा हुई है। ऊंट गाड़ा के आविष्कार ने एक और जहां इसकी साख कायम रखी है। वहीं ट्रैक्टर के चलन ने इसे उपेक्षित किया है। किन्तु चिन्ता का विषय है कि ऊंट की संख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है जो कि एक चिन्ता का विषय है।

अकाल के समय में चारे, पानी, दाना के भावों में बहुत अधिक तेजी के दौर से भी आम लोगों का रुझान इस तरफ कम हो रहा है। अकाल में पशुओं की मौत भी इनकी कीमतों में गिरावट का कारण है। अकाल के निरन्तर पड़ने से लोगों का इस पर से विश्वास खत्म हो रहा है।

वर्ष 1969-1988 व 2003 के अकाल के बाद पशु मूल्य वृद्धि बढ़ी है। इसका कारण इस अकाल में आम लोगों के पशुओं का मर जाना था। इसके अगले साल में पशुओं की मांग भी अधिक बढ़ जाती है। इसकी पूर्त्रि करने के लिए इनकी मांग बढ़ जाती है।

वर्ष 2002–2003 में भयंकर अकाल के कारण जिले में पशुधन बैमोत हजारों की सख्ंया में मर गया था, यहां के लोगों ने चारे की समस्या को देखते हुए अपने पशुओं को कम भावों में ही बेच दिया।
जिन लोगों के पास कम पशु थे वे लोग इक्टठे होकर अपने –अपने पशुओं को लेकर अलवर, श्रीगगांनगर, हरियाणा, पजांब, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि स्थानों पर ले गए। जहां ये लोग इनको हरा–चारा भी कम भावों और आसानी से मिल जाता है। कुछ लोगों ने बाहर के व्यापारियों को अपने पशुओं को बेच दिया। जहां से ये कत्लखाना ले जा कर काट दिए गए। अब धीरे- धीरे माहौल में सुधार हो रहा है।
- चतर सिहं जाम
गावं- रामगढ़
जिला –जैसलमेर